नवभारत
पुणे /नाशिक
11 जनवरी 2018

वन्यजीव संरक्षण जरूरी

एम. के. रणजित सिंह की लोगों से अपील

कुदरत के सभी घटकों पर दिया जाए ध्यान

संवाददाता

पुणे. पर्यावरण का बचाव करते समय केवल कुछ विशिष्ट घटकों पर ही ध्यान केंद्रित किया जाता है. बाघों के संवर्धन के लिए तो हम गंभीर रहते हैं, लेकिन लुप्त हो रहे अन्य प्राणियों तथा समुद्र की अनेक वनस्पतियों, जीव जो लुप्त होने की कगार पर हैं उनकी हम अनदेखी कर रहे हैं, जो ठीक नहीं है. कुदरत के सभी घटकों की ओर समान रूप से हमारा ध्यान होना चाहिए. प्रकृति का बचाव करने की यह आखिरी संधि है. इसीलिए प्रकृति के सभी घटकों का बचाव करने के लिए सभी को एकत्रित होना होगा. उक्त मत वरिष्ठ पर्यावरण अभ्यासक व वसुंधरा सम्मान से सम्मानित एम. के. रणजित सिंह ने व्यक्त किए.

12 वें किर्लोस्कर वसुंधरा फिल्म महोत्सव का समापन

12वें किर्लोस्कर वसुंधरा अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का समापन हो गया. इस समय व्यासपीठ पर किर्लोस्कर कंपनी के ज्वाइंट मैनेजमेंट डायरेक्टर आर. आर. देशपांडे, किर्लोस्कर कंपनी के अतुल किर्लोस्कर, अध्यक्ष माधव चंद्रचूड, निमंत्रक आरती किर्लोस्कर, संयोजक वीरेंद्र चित्राव उपस्थित थे. इस समय जीवनगौरव पुरस्कार देकर वरिष्ठ साहित्यकार मारुति चितमपल्ली का सम्मान किया गया. ग्रीन टीचर पुरस्कार से डॉ. दीपक आपटे, इको जर्नलिस्ट पुरस्कार पत्रकार आरती कुलकर्णी को दिया गया.

1 रणजित सिंह ने कहा कि संवर्धन करते समय पर्यावरण विरुद्ध विकास का दृष्य नहीं पैदा होना चाहिए. आज हम केवल मानव के संवर्धन के लिए ही बात करते हैं. पर यह चित्र बदलना होगा.

2 संवर्धन के लिए जड़ से विचार होना चाहिए. और इसकी शुरूआत स्कूल व कॉलेजों से होनी चाहिए. लोगों को अंदर से लगना चाहिए कि इनका जतन होना चाहिए. हम अपना घर स्वच्छ करते हैं तथा घर के कचरे को बाहर फेंकते हैं. इस मानसिकता को हमें बदलना होगा.

राज्य के वन्यजीव प्रबंधन पर चितमपल्ली हुए नाराज

हममें संवर्धन का सर्वांगीण दृष्टि से विकास होना चाहिए. सित निसर्ग संवर्धन पर हमारा सामाजिक-आर्थिक विकास, अन्न सुरक्षा निर्भर है. इसमें प्रशासन व राजनैतिक घटकों की अहम भूमिका होनी चाहिए. महाराष्ट्र में वन्यजीव का व्यवस्थापन उचित प्रकार से नहीं हो रहा है.

संशोधन, अभ्यास में भी बेहतर काम नहीं हो रहा है. उक्त शब्दों में वरिष्ठ साहित्यकार मारुति चितमपल्ली ने राज्य के वन्यजीव प्रबंधन की खिंचाई की. उन्होंने आगे कहा कि व्याघ्र प्रकल्पों में पर्यटकों को बाघ दिखें, इसलिए बोरवेल खोद कर मार्ग के किनारे पानी की सुविधा की जाती है.